AUDITING

B.Com. Honours Part-1, Paper-2

Topic *– Difference Between Bookkeeping & Accountancy*

By- Dr. Jitendra Kumar

P.G. Dept. of Commerce & Business Management

H.D. Jain College, Ara, Bhojpur, Bihar- 802301

TOPIC – पुस्तपालन तथा लेखाकर्म में अन्तर
(Difference between Book-keeping and Accountancy)

पुस्तपालन तथा लेखाकर्म में अन्तर निम्नलिखित आधारों पर किया जा सकता है –

अन्तर का आधार	पुस्तपालन (Book-keeping)	लेखाकर्म (Accountancy)
1. कार्य क्षेत्र	इसमें दैनिक लेन-देन का प्रारंभिक पुस्तकों में तथा खाते में लिखना रहता है।	इसमें तलपट, लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा तैयार किया जाता है।
2. तकनीकी	जर्नल या सहायक पुस्तकों से खाताबही में खतौनी करना।	इस खतौनी को जाँचना कि वह ठीक है या नहीं।
3. कार्य निष्पादन की योग्यता	इसको साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी आसानी से कर सकता है।	इसके लिए प्रशिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।
4. कार्य का उत्तरदायित्व	पुस्तपालक केवल अपने कार्यों के लिए ही उत्तरदायी होता है।	लेखापाल अपने कार्य के साथ-साथ पुस्तपालक के कार्यों के लिए भी उत्तरदायी होता है।
5. वैधानिक नियम	इसमें वैधानिक नियम की कोई विशेष आवश्यकता नहीं पड़ती है।	इसमें वैधानिक नियम का ~~पालन करना पड़ता है~~ की आवश्यकता पड़ती है।
6. समायोजन एवं भूल-सुधार	इसमें समायोजन एवं भूल-सुधार के लेखे पारित नहीं किये जाते हैं।	इसमें समायोजन एवं भूल-सुधार के लेखे पारित किये जाते हैं।

अन्तर का आधार	पुस्तपालन	लेखांकन
३. वित्तीय खाते	वित्तीय खाते बनाना पुस्तपालन के अन्तर्गत नहीं आता है।	जबकि वित्तीय खाते बनाना लेखांकन के अन्तर्गत आता है।
४. योग्यता	इसमें अन्तर्गत कर्मचारियों को विशेष ज्ञान एवं योग्यता की आवश्यकता नहीं पड़ती है।	इसके लिए कर्मचारियों को विशेष ज्ञान एवं योग्यता की आवश्यकता पड़ती है।
५. प्रारम्भ एवं अन्त	इसकी समाप्ति के बाद ही लेखांकन का कार्य प्रारम्भ होता है।	इसमें पुस्तपालन के लेखों का विश्लेषण किया जाता है।